P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-3* (Part-1) November- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

भारतीय साहित्य में देवी का स्वरूप

सारांश

जगत में 'देवी' की मान्यता और पूजा समस्त स्वरूप में पार्वती की ही अंशभूता हैं। संसार में शिव, विष्णु, राम की तरह से यह देवी दुर्गा स्वरूप में पूज्यमान है। दैत्य शक्ति के विनाश के लिये इनकी भयानक क्रुर रूप में कल्पना की जाती हैं। इसी रूप में इनको दुर्गा, चण्डिका, काली इत्यादि रूपों से सुसज्जित करके अभिहित किया गया है उन्हें अनेक शस्त्र–अस्त्र लिये हुये चित्रित किया जाता रहा है। इनको समस्त देवताओं में श्रेष्ठ बताते हुये ब्रह्मा, विष्णु और रूद्र को उन्हीं से उत्पन्न माना गया है।

शिव के दो रूपों की तरह पार्वती के भी दो रूप है। प्रथम सौम्य तथा द्वितीय उग्र। प्रथम रूप में उनको महादेवी शिवा (पार्वती) नाम से जाना जाता है। द्वितीय रूप में उनको भयानक एवं क्रूर रूप में जैसे–दुर्गा, काली, भद्रकाली, चण्डिका इत्यादि नामों से सम्बोधित किया जाता है। देवी के यह दोनों रूप भी पृथक नहीं रहे है जहाँ उनके सौम्य रूप की उपासना का विधान है वही उग्र रूप में भी उनकी उपासना का संकेत मिलता है जिस रूप में वह दानवों का संहार करती है तथा 'महामाता' कहलाती है।

मुख्य शब्द : देवी शक्ति, शिव प्रिया, प्रकृति, साहित्य, शिव, पार्वती, महादेवी, भारतीय संस्कृति, पहाड़ी कला, वैदिक साहित्य, धर्म।

नीलम कांत
असिस्टेन्ट प्रोफेसर व
विभागाध्यक्ष,
चित्रकला विभाग,
श्रीमती बी. डी. जैन गर्ल्स पी0 जी0
कॉलेज, आगरा

प्रस्तावना

यह सुविदित तथ्य है कि वैदिक आर्यों ने किसी ऐसी प्रभावशलिनी देवी की कल्पना नहीं की जिसे वे जगत् की अधिष्ठात्री तथा सृष्टि की उत्पत्ति एवं पालन से सम्बन्धित समझते हों। उषा की कल्पना में लावण्य, मनोरमता तथा सौन्दर्य है, किन्तु प्रभाव नहीं। देवी पार्वती की मान्यता जगत में अनेकों रूपों में व्याप्त है। समाज में व्याप्त धार्मिक प्रवृत्ति से जुड़े लोग पूज्या देवी पार्वती को उनके स्वरूप की कल्पना करके उसे एक आकार देकर कला जगत में उनकी महिला का गुणगान करते हैं। देवी पार्वती शंकर भगवान की अर्द्धांगिनी एवं गिरिराज हिमालय की पुत्री हैं शुभ लक्षणा पार्वती शिव जी को प्राणों से अधिक प्रिय है। पार्वती का व्यक्तित्व करूणा, त्याग, तपस्या, सौहार्द, सेवा भावना, कष्ट–सहिष्णुता एवं तेजस्विता आदि शील गुणों, निर्दिष्ट काम, शिशुरक्षा, विनम्रता, सामाजिकता, शरण–याचन, पति–प्रेम, धर्म प्रेम एवं पितृप्रेम आदि स्थायी भावों का प्रबल नैतिक अंह, स्वतन्त्र एवं दृढ़संकल्प शक्ति तथा शीर्षस्थ वृद्धिलब्धि का उकृष्ट समन्वय है। जगत गुरू अपनी शक्ति से संयुक्त होकर ही अपना कार्य करने में समर्थ होते हैं समय प्रवाह में यह देवी शक्ति अपने अनेकों रूपों में विस्तार पाकर हमारे विभिन्न क्रिया–कलापों में शामिल होकर सबका कल्याण करती है। वो जगत के प्राणियों को जीवन पोषण से अभिभूत कराती है क्योंकि इनकी अपनी शक्ति माया विकसित स्वरूप बदलता रहता है और वह माया शक्ति सदैव इन महाशक्ति से अभिन्न रहती है। वह महाशक्ति की ही स्वशक्ति है और शक्तिमान शक्ति कभी अलग नहीं हो सकती।

शोध पत्र का उद्देश्य

भारतीय साहित्य में देवी के स्वरूपों का विवेचन अलग–अलग रूपों में किया गया है कभी उनको सौम्य तो कभी उनको रोद्ध रूप में उल्लेखित किया गया इसी उद्देश्य से जगत में उनके दोनों रूपों को दर्शाने का कार्य बड़ी कुशलता से भारतीय चित्रकारों ने अपनी कला साधना के द्वारा दर्शाया है जिससे सभी भली भाँति अवगत हो सके।

शोध विषय क्षेत्र

प्रकृति की जितनी भी शक्तियाँ हैं। वे सभी ईश्वरीय शक्ति की ही अभिव्यक्तियाँ हैं। इसी से उस मूल शक्ति को सर्वसामर्थ्ययुक्ता कहा गया है। विश्व में जहाँ भी शक्ति का स्फुरण दिखता है, वहाँ सनातन प्रकृति अर्थात जगदम्बा की ही सत्ता है। वह समस्त क्रिया की मूल कियाशील शक्ति है। सृष्टिकर्ता अपनी सृजनकारिणी शक्ति से हीन होने पर सृष्टिकर्ता नहीं रह जाता,

उत्पादिका शक्ति ही इस चरम सनातन शक्ति की अभिव्यक्ति है। इसीलिये हिन्दू धर्म शास्त्र सृष्टिकर्ता ब्रहमा, सृष्टि चालक विष्णु व सृष्टिसंहारक रुद्र को उस जगत जननी से उत्पन्न हुआ मानते हैं। एक ही परमतत्व शक्ति की निर्गुण, सुगुण–निराकार, साकार देव, देवी आदि अनेक रूपों में भक्त लोग उपासना करते है।[1]

जगत में 'देवी' की मान्यता और पूजा समस्त स्वरूप में पार्वती की ही अंशभूता हैं। संसार में शिव, विष्णु, राम की तरह से यह देवी दुर्गा स्वरूप में पूज्य मान है। दैत्य शक्ति के विनाश के लिये इनकी भयानक क्रुर रूप में कल्पना की जाती हैं। इसी रूप में इनको दुर्गा, चण्डिका, काली इत्यादि रूपों से सुसज्जित करके अभिहित किया गया है उन्हें अनेक शस्त्र–अस्त्र लिये हुये चित्रित किया जाता रहा है। इनको समस्त देवताओं में श्रेष्ठ बताते हुये ब्रह्मा, विष्णु और रूद्र को उन्हीं से उत्पन्न माना गया है। कालान्तर में इसी शक्ति का इतना विकास हो जाता है कि समस्त देवताओं की भी वही शक्ति मानी जाने लगती है।

ब्रहमवैवर्तपुराण में भगवान श्री कृष्ण कहते है–

त्वमेव सर्वजननी मूल प्रकृतिश्वरी।

त्वमेवा द्या सृष्टि विधों स्वेच्छया त्रिगुणात्मिका।

अर्थात–तुम्ही विश्वजननी मूल प्रकृति ईश्वरी हो तुम्ही सृष्टि की उत्पत्ति के समय आद्ययाशक्ति के रूप में विद्यमान रहती हो और स्वेच्छा से त्रिगुणात्मका वन जाती है।[2]

ऋग्वेद में कहा गया है कि गौरी मिर्माय सलिलानि तक्षति।[3]

''शास्त्र और पुराण भगवती की गौरव गाथा का निरन्तर गान करते है। शक्ति ही जीवन है, शक्ति ही धर्म है, शक्ति ही गति है शक्ति ही आश्रय है, शक्ति ही सर्वस्य है, यही समझकर परामात्यरूपा महाशक्ति का अनन्य रूप से आश्रय ग्रहण करना चाहिए। महाशक्ति ही सर्व कारण रूप प्रकृति की अधारभूता होने से महाकरण है, यही मायाधीश्वरी है, यही सृजन पालन संहारकारिणी आधा नारायनी शक्ति है। यही प्रकृति के विस्तार के समय भर्त्ता, भोक्ता और महेश्वर होती है। परा और अपरा दोनों प्रकृतियाँ इन्हीं की है। इनमें द्वैतादैत दोनों का समावेश है। यही शाक्तो की महादेवी और दशविद्या, नवदुर्गा है, यही अन्नपूर्णा जगद्रात्री, कात्यायनी, ललितांबा है। यही शक्तिमान है। यही शक्ति है। परमात्व रूपा यह महाशक्ति स्वयं अपरिणमिनी है, परन्तु इन्हीं की माया शक्ति से सारे परिणाम होते हैं। यह स्वभाव से ही सत्ता देकर अपनी माया शक्ति को क्रीड़ाशीला अर्थात क्रियाशील बनाती है, इसीलिए इनके शुद्ध विज्ञानानंद धन नित्य अविनाशी एक रस परमात्म रूप में कदापि कोई परिवर्तन न होने पर इनमे परिणाम दिखता है।[4]

सम्पूर्ण सृष्टि विशिष्ट चेतना युक्त है, सर्वभूत चेतना सम्पन्न है। देवी शक्ति इसी का दूसरा नाम है। सदा कल्याण में प्रवृत्त होने वाली यह दिव्य ऊर्जा ही है जो अपने देवी रूप में भगवान शिव को वह कल्याणकारी शक्ति प्रदान करती है जिससे वह 'शिव' है। शक्ति का इकार ही शिव का इकार है अन्यथा ये जीवन स्पन्दन रहित 'शव' (निष्क्रय) रह जाते है। जगतगुरु अपनी शक्ति से सुंयक्त होकर ही अपना कार्य करने में समर्थ होते है। समय प्रवाह में यह देवी शक्ति पराबां अपने अनेक रूपों में विस्तार पा हमारे विभिन्न क्रिया–कलापों से जुड़ती चली गई।[5] वे जगत के प्राणियों को जल (जीवन, दूध पोषण) पिलाती है, संतति का अविर्भाव माता से होता हैं। परमात्मा स्वयं को स्त्री–पुरुष दो रूपों में रखता है जिसमें मात्त्व और पित्त्व दोनों ही प्राप्त होते है। परमात्मा शिव और उनकी शक्ति में स्वल्प भी अन्तर नहीं है। इस अभेद प्रदर्शन को दार्शनिक क्षेत्र में शक्ति की भांति पौराणिक क्षेत्र में 'उमा' को सम्पूर्ण शक्तियों की आदिभूत त्रिलोक जननी, शिवा आदि अनेक नामों से अभिहित किया गया है।[6] क्योंकि इनकी अपनी शक्ति माया का विकसित स्वरूप नित्य क्रीड़ामय होने के कारण सदा बदलता ही रहता है और वह माया शक्ति सदा इन महाशक्ति से अभिन्न रहती है। वह महाशक्ति की ही स्वशक्ति है और शक्तिमान शक्ति कभी पृथक नही हो सकती, चाहे वह पृथक दीखे भले ही। अतएव शक्ति का परिणाम स्वयंमेव ही शक्तिमान पर आरोपित हो जाता है इस प्रकार शुद्ध ब्रहम या महाशक्ति से परिणाम वाद सिद्ध होता है। संसार रूप में व्यक्त होने वाली यह समस्त क्रीड़ा महाशक्ति पार्वती की अपनी शक्ति माया का ही खेल है। माया शक्ति उनसे अलग नही इसलिए यह सारा उन्हीं का ऐश्वर्य है।[7]

अनेकों ग्रन्थों में हम पार्वती को अम्बिका, हेमवती, दूर्गा, पार्वती वैदिक देवता रूद्र की पत्नी) और काली जो मूलतः प्राचीन अग्नि देव की पत्नी है) के रूप में पाते है। इन सभी में अत्यन्त लोक प्रिय है पार्वती, दुर्गा और काली। जो हिमवान हिमायल पर्वत की पुत्री है और शिव के साथ विवाही गई, वहीं उमा, देवासुर संग्राम के समय शुभ–निशुभ से पीडित देवताओं की स्त्रुति पर अपने शरीर कोष से कोशिका को उत्पन्न करती है तथा कोशिकी नाम से विख्यात हुई।[8]

शिव के दो रूपों की तरह पार्वती के भी दो रूप है। प्रथम सौम्य तथा द्वितीय उग्र। प्रथम रूप में उनको महादेवी शिवा (पार्वती) नाम से जाना जाता है। द्वितीय रूप में उनको भयानक एवं क्रूर रूप में जैसे दुर्गा काली, भद्रकाली चण्डिका इत्यादि नामों से सम्बोन्धित किया जााता है। देवी के यह दोनों रूप भी पृथक नहीं रहे है जहाँ उनके सौम्य रूप की उपासना का विधान है वही उग्र रूप में भी उनकी उपासना का संकेत मिलता है जिस रूप में वह दानवों का संहार करती है तथा 'महामाता' कहलाती है। पार्वती रूप में स्तवन होने पर भीषण रूप का भी उल्लेख है। कोशिकी देवी के शरीर से निस्तृत होने के बाद पार्वती ने कृष्णवर्ण धारण कर लिया तब से कलिका देवी के नाम से विख्यात होकर हिमालय में वास करने लगी।[10]

निस्सृतायांतुतस्या...........................कालिका सा प्रकीर्विता।

लगभग सभी प्रमाणों के आधार पर पार्वती के शरीर से निस्तृत शक्तियाँ ही पृथक–पृथक नाम एवं स्वरूपों द्वारा दानवों का संहार कर देवी को अभय देती रही। देवी पार्वती का भयंकर तामसी रूप 'महाकाली' है। जिसे देवी भागवत में कालरात्री वर्णित किया है। भयानक

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-3* (Part-1) November- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

रूपोपासना के अन्तर्गत यही कृष्णकर्णा काली सौम्य रूप में गौर वर्णा सर्वश्रेष्ठ नारी पार्वती कल्पित है। [4]

दक्षस्यमम् पुत्रस्य................. ....चित्तेशिवोवास दयान्विता।

साधारणता पार्वती को सदैव हिमालय पर्वत की पुत्री तथा नारीत्व की अभिव्यक्ति परम श्रेष्ठ महिला कहा है। शिव महापुराणानुसार पराशक्ति सती रूप में अवतरित हुई एवं पिता दक्ष के यक्ष में योगाग्नि द्वारा शरीर को भस्म कर पुनः पार्वती रूप में हिमालय के घर जन्म लिया। [11]

पार्वती के जन्म के अवसर पर उनके नामकरण संस्कार के समय दिये गये नाम निम्नलिखित है–उमा, काली, तारा, महाविद्या, षोड़सी, भुवनेश्वरी, भैरवी, छिन्मस्ता, घूमावती वगलामुखी, सिद्ध, विद्या, मांतगी, कमलात्मिका आदि फिर भी कुलोचित नाम पार्वती उच्चारित किया जाने लगा। शिव की प्राप्ति हेतु कृतसंकल्प पार्वती को कठिन तप से रोका जाने पर इनका 'उमा' नाम विख्यात हुआ।[12]

पार्वती द्वारा एक लम्बे समय तक तपस्या किये जाने पर इन्होंने पति रूप में शिव को प्राप्त किया। देवासुर संग्राम में देव हिताय सौम्य रूप का परित्याग कर यही पार्वती रौद्र रूप में प्रत्यक्ष होती है। एवं युद्ध भूमि में भिन्न स्वरूपों को प्रगट और समाहित करती दिखायी देती है। शुभ वध प्रकरण में शुभ देवी से कहता है कि तू दूसरी स्त्रियों का अवलंव लेकर अभिमान कर रही है। अम्बिका स्वयं कहती है–ओ दृष्ट ! मैं अकैली ही हूँ, इस संसार में मेरे अतिरिक्त दूसरी कौन है। देख ये सब मेरी ही विभूतियाँ है अतः मुझमें ही प्रवेश कर रही है। तदन्तर सभी देवियाँ अम्बिका के शरीर में लीन हो जाती है और केवल अम्बिका ही शेष रह जाती है।[13]

निष्कर्ष

अतः कहा जा सकता है कि साहित्य के आधार पर देवी के स्वरूपों का विवेचन माया शक्ति, आद्यशक्ति, सौम्यरूप व उग्ररूप में दर्शाया गया है। संसार में यही देवियाँ अनेको नाम से विभिन्न स्वरूपों में पूज्या है। देवी पार्वती की भिन्न–भिन्न रूपों में उपासना का विधान है। यही देवी भक्तो को सुख देती है तथा असुर व्यक्तियो का नाश करके दानवता पर मानवता की विजय का बोध कराती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *आदर्श गौड : पहाड़ी शैली के लघु चित्रों में हिन्दु देवियों का रुपांकन, पृ. 39।*
2. *ब्रहमवैवर्त पुराण : 2/66/7–10।*
3. *ऋग्वेद : 2/3/22, 11।*
4. *प्रो. वीरा चार्य शास्त्री : दैनिक जागरण, 24 सितम्बर, 2002।*
5. *डा. नताशा अरोड़ा : दैनिक जागरण, 8 अक्टूबर 2002।*
6. *शिव महापुराण : 2/3/6/45–46।*
7. *प्रो. वीराचार्य शास्त्री : दैनिक जागरण–24 सितम्बर 2002।*
8. *वामन पुराण : अध्याय 21, पृष्ठ–125।*
9. *शिव महा पुराण : 2/3/5–21।*
10. *मार्कण्डेय पुराण अध्याय : 82 श्लोक–43, 44।*
11. *श्रीमद् देवी भागवत पंचम स्कन्ध, अध्याय–22, श्लोक, 2।*
12. *शिव महापुराण : 3/3/22–27।*
13. *आदर्श गौड : पहाड़ीशैली के लघु चित्रों में हिन्दू देवियों का रुपाकंन, पृष्ठ सं0 110*
14. *दुर्गा सप्तशती : अध्याय 10, श्लोक 5, 6।*

चित्रसं. 1 पहाड़ी दुर्गा महिषासुर को मारती

चित्र सं. 5 चम्बा शिवपार्वती पोखर में